Journal *de* Brahmavart
Volume one ,Issue one
ISSN 2394- 6326

Quarterly Published by
Brahmavart Research Institute
7A/1 Aman Patel Complex
Vishnupuri Kanpur U.P. India

gekjh /kjkgj & dkuiqj ifj{k= e bZVk d ikphu efUnj

b0 ,e0 d0 vfuy
सहा0आ□भ0 लो0नि0□व0 कानपुर
अजय त्रिवेदी
जिला युवा कल्याण अ□धकारी कानपुर

संसार के समस्त धर्म ,सम्प्रदाय या पंथ किसी एक सत्ता या परमेश्वर को अपना आराध्य मानते हैं, एवं उनकी उपासना विभिन्न प्रकार से करते हैं। यह उपासना निराकार या साकार रूप में की जाती है। सामान्यतः निराकार उपासना ज्ञान मार्गी होती है और यह गम्भीर चिन्तक और ज्ञानी व्यक्ति ही कर पाते हैं। इसके विपरीत साकार उपासना अत्यन्त सहज और सामान्य मानी गयी है। जिसमें अपने आराध्य की मूर्ति स्थापित कर विभिन्न प्रकार से उनकी पूजा करने का प्रचलन है। इसलिये इस उपास्य मूर्तियों को स्थापित करने के लिये विभिन्न प्रकार की संरचना जिन्हें हिन्दू वैदिक धर्म में मन्दिर कहा जाता है, स्थापित की गयीं। चूँकि विचलित एवं भ्रमित मानव को अपने मन को एकाग्र करने के लिये मूर्ति पूजा की आवश्यकता हुई इसलिये शुरूआती दौर में धर्म ही मूर्ति कला के प्रारम्भ का कारण बना। भारतीय इतिहास में मूर्तिकला का प्रारम्भ बौद्धों द्वारा किया गया तथा बौद्धों और जैनियों ने इसका प्रचार प्रसार किया। सम्भवतः गांधार मे पहली मूर्ति जो भगवान बुद्ध की थी प्रथम शताब्दी के आस–पास बनायी गयी। प्रारम्भिक मूर्ति निर्माण का हेतु पूजा था इसलिये मन्दिर उतने ही प्राचीन कहे जा सकते हैं जितनी कि मूर्ति पूजा। भारत में मन्दिरों का विकास बौद्धों के अनुकरण पर हुआ और बौद्ध अनुयायी स्तूपों को अपनी पूजा का केन्द्र मानते थे इसलिये प्रारम्भिक मन्दिर आकार में स्तूपों के समान दिखाई पडते हैं। धीरे–धीरे मन्दिर वास्तुकला का विकास हुआ और इसके अधिश्ठान, जंघा, विमान तथा शिखर आदि अवयव विकसित हुये। भारतीय वास्तुकला में विभिन्न शैलियां विकसित हुईं, जिसे उत्तर

भारत में नागर शैली, मध्य भारत मे वेसर शैली एवं दक्षिण भारत में द्रविण शैली कहा जाता है।

प्राचीन भारत में वैदिक धर्म के अनुयायी निराकार प्रभु की उपासना करते थे परन्तु साकार उपासना की सरलता एवं सहजता तथा कदाचित बौद्धों एवं जैनियों के प्रभाव में हिन्दू धर्म में साकार उपासना प्रारम्भ हुयी, इसके लिये मन्दिरों का निर्माण आवश्यक हो गया। पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार प्रारम्भिक मन्दिरों के अवशेश गुप्तकाल से प्राप्त होते हैं। इसके पूर्व के मन्दिर जो सम्भवतः घास–फूस या काष्ठ से निर्मित रहे होगें, वह समय के प्रभाव तथा प्राकृतिक आपदाओं से नश्ट हो गये। इसीलिये हम यह मानते हैं कि प्रारम्भिक हिन्दू मन्दिरों का निर्माण गुप्तकाल से प्रारम्भ हुआ जिसे चौथी या पांचवी ईसवी से पूर्व नहीं रखा जा सकता है। भारत में प्राप्त होने वाले लगभग 10 गुप्तकालीन मन्दिरों में नचना कुठार मन्दिर, देवगढ़ का दशावतार मन्दिर, तिगवां का कंकाली देवी मन्दिर, भूमरा का शिव मन्दिर, एहोल का लाड़खान मन्दिर तथा कानपुर के भीतरगाँव के ईटों के मन्दिरों का विशेश महत्व है।

कानपुर का पुरातात्विक सर्वेक्षण करने पर यह पता चलता है कि घाटमपुर तहसील के अर्न्तगत पॉचवी छठी शताब्दी से लेकर बारहवीं –तेरहवीं भाताब्दी तक ईटों के विभिन्न मन्दिर बनाये गये। इससे लगी फतेहपुर सीमा को यदि भामिल कर लें तो लगभग 50 ईटों के मन्दिर पाये जाते हैं। इससे इस क्षेत्र की वास्तुकला के वै ाश्ट्य का पता चलता है। यह मन्दिर 1000 से 1500 वर्श बीत जाने के बाद भी अभी तक दर्शनीय बने हुये हैं जो न केवल कानपुर के पर्यटन महत्व को बढाते हैं वरन कानपुर की वास्तुकला की विशिश्टता को भी स्थापित करते हैं। इन ईटों के मन्दिरों में भीतरगाँव के प्राचीनतम मन्दिर को छोडकर निबियाखेडा, कुर्था, परौली, करछुलीपुर, भाम्भुवा, बिहूपुर आदि स्थानों के मन्दिरों को भारतीय पुरातत्व विभाग ने संरक्षित भी किया है। आइये कानपुर के महत्वपूर्ण परन्तु कम चर्चित स्थानों पर एक दृश्टि डालें –

1½ Hkhrjxkao dk efUnj – गुप्तकाल कें अन्य मन्दिर पाशाण निर्मित हैं परन्तु शुद्ध मिट्टी की पकी ईटों से निर्मित यह भीतरगॉव का मन्दिर अपनी विशिश्ट वास्तुकला का प्राचीनतम एवं एकमात्र मन्दिर है। जरनल कनिंघम के अनुसार यह मन्दिर सातवीं शताब्दी का है जबकि वोगेल के अनुसार यह तीसरी या चौथी शताब्दी का है। यह मन्दिर ऊँचे चबूतरे पर बना है जिसमें तीन ओर की बाहरी दीवार बीच में आगे की ओर निकली हैं तथा पूर्व की ओर ऊपर मण्डप में जाने के लिये सीढियाँ एवं द्वार है। मण्डप के अन्दर गर्भगृह में जाने हेतु पुनः एक द्वार बनाया गया है। गर्भगृह का कमरा एवं मण्डप वर्गाकार है जिसकी छत पिरामिड आकार की है। मन्दिर की दीवारों पर दोहरे छज्जे हैं जिसकी गर्भगृह की लम्बवत दीवार एंव शिखर विभाजित है शिखर ऊपर की ओर पतला हो गया है। शीर्श भाग के खण्डित हो जाने के कारण यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि यहाँ पर शिखर

का आमलक व कलश था या नहीं। मन्दिर की बाहरी दीवारों के आलों में भारतीय देवताओं की टेराकोटा (मिट्टी) की सुन्दर मूर्तियां स्थापित की गयी हैं इनमें ि ाव– पार्वती, गणेश ,भगवान बुद्ध, भोशसायी विश्णु आदि देवताओं की मूर्तियां दर्शनीय है। मन्दिरों की बाहरी दीवारों को ज्यामितीय आकारों से अत्यन्त सुन्दरता से तराशा गया है इसके अतिरिक्त इन्हीं ईटों मे बेल–बूटों को भी उकेरा गया है जो दर्शनार्थियों को मोहित करती हैं। सम्पूर्ण भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व से कला प्रेमी, इतिहासकार एवं वास्तुविद इस अत्यन्त सुन्दर इमारत को देखने आते हैं।

भीतरगाँव का ईंटों का मन्दिर

निबियाखेडा का मन्दिर

2½ fufc;k[kMk :– कानपुर के ईटों के मन्दिरों की श्रृंखला मे निबियाखेड़ा का अत्यन्त विशिश्ट स्थान है। यहाँ पर एक मुख्य मन्दिर के साथ–साथ चार अन्य छोटे मन्दिर भी पाये जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी मूल संकल्पना पंचायतन मन्दिर शैली की रही होगी। यह मन्दिर भीतरगाँव के ईटों के मन्दिर के काफी बाद निर्मित किया गया था। इसे 11वीं शताब्दी के पहले का नहीं कहा जा सकता। यह मन्दिर अपने पूरे आकार मे विद्यमान है परन्तु इसमे आमलक एवं शिखरघट नहीं है। कदाचित ईटों के मन्दिरों मे इसका प्रचलन नहीं था। यह मन्दिर वास्तुकला के विभिन्न अवयवों के अनुसार निर्मित है। इसमें आधार, जंघा, विमान, भद्र, प्रतिभद्र, कोणक, रथ, प्रतिरथ आदि द र्शनीय है। यह मन्दिर पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित होने के कारण एवं स्वाभाविक सुन्दरता के कारण द र्शकों को अपनी ओर आकर्शित करता है। मन्दिरों के भीतर शिवलिंग को स्थापित किया गया है। मन्दिरों के

द्वार पर मकरवाहिनी गंगा एवं कूर्मवाहिनी यमुना विराजमान हैं। साथ ही द्वारशाखा के ऊपरी भाग पर नवग्रहों व गजलक्ष्मी का अंकन भी किया गया है। मन्दिर की बाहरी दीवारो पर उकेरी गयी ज्यामितीय आकृति अत्यन्त सुन्दर है। ऊपर से देखने पर मन्दिर एक खिले हुये कमल की तरह से दिखाई देता है। मन्दिर के तीन कोनों पर एवं एक मध्य में बने हुये मन्दिर वर्गाकार है एवं भीतर से सादे हैं। बाहरी दीवारों की ईटों पर अत्यन्त सुन्दर कलाकृतियाँ उकेरी गयी हैं।

3½ dFkk d bVk d efUnj :– भीतरगाँव से 8 कि0मी0 दूर ग्राम कुर्था में गाँव से बाहर एक अहाते के भीतर तीन प्राचीन मन्दिरों के अवशेश प्राप्त हुये हैं। यह तीनों मन्दिर ईटों से तथा अलग–अलग अधिश्ठानों पर निर्मित हैं। इनमें से एक मन्दिर आधार को छोडकर लगभग नश्टप्राय है, दूसरे मन्दिर की कुछ दीवारें भोश हैं तथा तीसरे मन्दिर के गर्भगृह की जंघा की दीवार अभी सुरक्षित है। शैली के दृश्टिगत यह मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दी के प्रतीत होते हैं। यह भी प्रतीत होता है कि यह मन्दिर अपेक्षाकृत बडे रहे होगें। मन्दिर की बाहरी दीवारों पर विशेष प्रकार के आले निर्मित रहे होगें। इस स्थान पर पत्थर की टूटी हुई अनेक मूर्तियों के अवशेश प्राप्त हुये हैं। सम्भवतः ये मन्दिर किसी प्राचीन व्यापारिक मार्ग पर रहे होंगे, जो अपने मूल रूप में पर्याप्त दर्शनीय रहे होगें।

कुर्था का ईंटों का मन्दिर

करछुलीपुर का मन्दिर

4½ djNyhiqj – करछलीपुर ग्राम मे ईंटों से निर्मित प्राचीन मंदिर है जो कानपुर से लगभग 25 कि0मी0 दूर स्थित है। यह भीतरगाँव के विश्व प्रसिद्व गुप्तकालीन मंदिर से 16 कि0मी0 दूर स्थित है। यह मन्दिर गाँव के बाहर स्थित है, जिसे पुरातत्व विभाग ने संरक्षित कर पूर्व मुगलकालीन आकृति में बदल दिया है जिससे मन्दिर का मूल स्वरूप बदल गया

है। यह मन्दिर कदाचित 13वीं –14वीं शताब्दी का प्रतीत होता है। मंन्दिर के गर्भगृह मे ि ावलिंग है तथा द्वार पर देवी सरस्वती एवं यक्ष की प्रतिमा स्थापित है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह ि ाला पट कहीं अन्य से लाकर लगा दिया गया है। मंदिर के बाहर पेड के नीचे खण्डित हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियां पड़ी हुई हैं। मन्दिर में गर्भगृह, अन्तराल, मण्डप तथा प्रवे ा द्वार हैं। इस प्रवेश द्वार पर भूमि से अधिश्ठान को पार करते हुये सीढियाँ हैं। मन्दिर के मण्डप में मुगलकालीन ज्यामितीय आकृतियाँ हैं। छत के एक पैनल पर मुगलकालीन चित्रकारी भी दिखाई देती है। यहाँ पर एक शिलापट्ट भी स्थापित है जिस पर नवग्रहों की स्थापना की गयी है। मन्दिर के द्वार पर एक अभिलेख भी लिखा गया है। । मन्दिर के अहाते में अनेक मिट्टी के ठीकरे, प्राचीन मिट्टी के बर्तन तथा अन्य अवशेश भी प्राप्त हुये हैं। जिससे यह ज्ञात होता है कि यह स्थान भी पूर्व में महत्वपूर्ण रहा होगा।

5) **fcgiij** – यह मन्दिर घाटमपुर जहानाबाद मार्ग पर ग्राम नौरंगा से लगभग 7 कि0मी0 दूर स्थित है यहाँ पर पुरातत्व विभाग द्वारा एक ईटों का मन्दिर संरक्षित किया गया है जिसे फूलमती देवी का मन्दिर कहते हैं। मन्दिर का प्राचीन स्वरूप नश्ट हो चुका है वर्तमान में यह एक आधुनिक कमरे के समान है। मन्दिर के गर्भगृह में कसौटी के पत्थर की प्राचीन देवी प्रतिमा स्थापित है। मन्दिर के बाहर एक पेड के नीचे खण्डित मूर्तियाँ रखी हैं। प्राप्त मूर्तियों से लगाये गये अनुमान के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह मन्दिर 12वीं–13वीं ाताब्दी का होगा। यह मन्दिर काल के प्रभाव से नश्ट हो गया है। मन्दिर के पास ही एक टीले पर प्राचीन सभ्यता के अनेक अवशेश प्राप्त होते हैं जिसमे मिट्टी के सकोरे, लाल–काले मृद्भाण्ड तथा अनेक बड़े बर्तन प्राप्त हुये हैं। टीले के ऊपर एक स्थान पर अनेक खण्डित मूर्तियां पड़ी हुई हैं जो कलात्मक दृश्टि से अत्यन्त सुन्दर हैं। इनमें से भगवान वि णु (इन्द्र देवता) की मूर्ति सर्वश्रे ठ है। टीले के पार्श्व में बनी सड़क की खुदाई मे कौडियों के बड़े–बड़े ढेर प्राप्त हुये हैं जिससे यह पता चलता है कि यह प्राचीन काल में यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र रहा होगा। इस टीले की खुदाई से प्राचीन सभ्यता या नगर के अवशेश प्राप्त होने की सम्भावना है। टीले पर एक अर्धनिर्मित अश्टकोणीय मन्दिर की संरचना प्राप्त हुई है जिसकी दीवारें मोटी है इसमें अत्यधिक बड़े आकार की ईटें प्रयोग में लायी गयी है ।

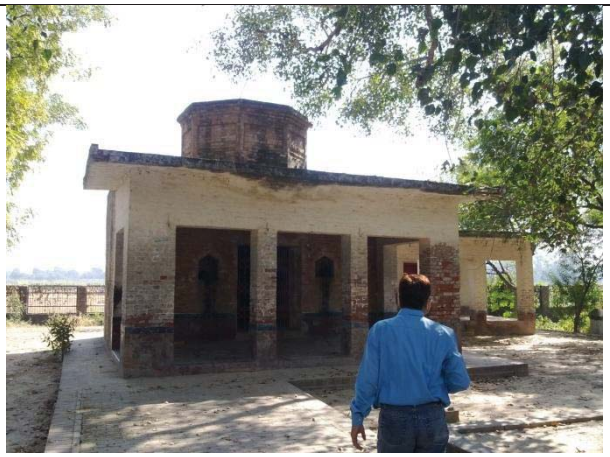

fcgij का फ़ूलमती मन्दिर

fcgij टीले पर प्राप्त भगवान विष्णु की मूर्ति

उपर्युक्त मन्दिरों मे अतिरिक्त अनेक भव्य मन्दिर भी विद्यमान हैं जिनमें पतारा का मंदिर, शम्भुवा का मन्दिर ,घाटमपुर का पीसनहारी मन्दिर, बेहटा बुजुर्ग का जगन्नाथ मन्दिर प्रमुख हैं। कानपुर से लगे हुये फतेहपुर के ग्राम तेन्दुली, कोरारी, ठिठौरा एंव घोरहा के मन्दिर अत्यन्त दर्शनीय हैं। इन मन्दिरों को देखने से यह नि कर्श निकाला जा सकता है कि कानपुर क्षेत्र में ईंट स्थापत्य कला अपने विशि ट रूप में विद्यमान थी तथा ईटों के मन्दिर बनाने के अत्यन्त कुशल कलाकार यहाँ निवास करते थे। आज भी इस क्षेत्र मे ईंटों के सैकडों भट्ठे मौजूद हैं। यद्यपि कुछ प्राचीन ईटों के मन्दिर कानपुर क्षेत्र से बाहर भी पाये जाते हैं इनमें से कुछ हरियाणा, बिहार तथा राजस्थान में भी मौजूद हैं। परन्तु कानपुर क्षेत्र मे प्राप्त मन्दिर की अपने वैशिश्ट्य तथा प्राचीनता के कारण अद्वितीय हैं। यह आवश्यक है कि इन मन्दिरों को संरक्षित एवं विकसित कर कानपुर नगर को पर्यटन मानचित्र में इन स्थानों को शामिल किया जाय और इस विरासत से इतिहासकारों, छात्रों, पर्यटकों तथा को लाभान्वित कराया जाये।